अध्याय 46

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट)	***[शान्त समय]***
		अय्यूब 38,39,40,42

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पाढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (अय्यूब 38:39,40,42)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट)	***[सुसमाचार]***
		शिष्य बनाना : मत्ती 28:18-20

क-ध्यान करना

मत्ती 28:16-20 **पढ़ें**।

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

शिष्य बनाना मत्ती 28:18-20
यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥ मत्ती 28:18-20

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

1. महान दावा ... मत्ती 28:18

यीशु एक महान दावा करते हैं । उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के पश्चात् परमेश्वर पिता ने उन्हें सारा अधिकार प्रदान कर दिया है ।न केवल स्वर्ग का अपितु पृथ्वी का भी ।

1) भविष्यद्वाणी की परिपूर्ति स्वरूप अधिकार ।

यह पुराने नियम की एक भविष्यद्वाणी की परिपूर्ति थी ।

दानियेल 7:13,14 में यह इस प्रकार है। दानिय्येल 7:13–14 मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश–देश और जाति–जाति के लोग और भिन्न–भिन्न भाषा ने वाले सब उसके आधीन होंय उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा॥

यह नये नियम की एक भविष्यद्वाणी की भी परिपूर्ति थी । अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान से पहिले यीशु ने यह भविष्यद्वाणी की । मत्ती 16:28 '' मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।''

2) उसकी मृत्यु एवं पुनरूत्थान के पूर्व तथा पश्चात् अधिकार ।

देखें मैनुएल 3,अध्याय 30 ,प्रश्न 1 ।(मत्ती 28:18)''क्या ऐसा भी समय रहा जब यीशु के पास पूर्ण अधिकार नहीं था ?''

अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान से पहिले यीशु के पास बड़ा अधिकार था । पिता परमेश्वर ने सारी बातें उसके आधीन कर दी थीं ।मत्ती (11:27)। उसने बीमार को चंगा किया ,दुष्टात्मा ग्रस्त को छुड़ाया और अधरंग को बहाल किया ।(मत्ती 4:24)।हालांकि यह सब उसने एक सीमा में किया, क्योंकि उसे मरकर जी उठना शेष था । उसने चंगा हुए कोढ़ी और दृष्टिहीन से कहा कि यह बात किसी से न कहें ।(मत्ती 8:4,9:30)।उसने एक सांसारिक राजा बनाये जाने से इनकार कर दिया ।(यूहन्ना 6:14,15)। उसने स्वर्गदूतों की बारह पलटन की अभिरक्षा लेने से इनकार कर दिया ।(मत्ती26:53)।उसने मुर्दों को जिलाया पर अपने शत्रुओं को उसे घूंसे मारने , कोड़े लगाने, मुंह पर थूकने ,सिर पर कांटों का ताज रखने , सिर पर सरकंडे से मारने और अन्ततः क्रूसित करने दिया । (मत्ती26:67,27:1,2,26:31)।

अपनी मृत्यु तथा पुनरूत्थान से पूर्व यीशु ने अपने असीमित अधिकार का पूर्ण उपयोग नहीं किया ,क्योंकि उसने जान बूझ कर स्वेच्छा से स्वयं को खाली कर दिया। (फिलिप्पियों 2:6–8)

परंतु उसकी मृत्यु ,पुनरूत्थान ,स्वर्गारोहण और स्वर्ग में सिंहासन पर विराजमान होने के पश्चात् , वह स्वर्ग और पृथ्वी पर अपने असीमित अधिकार का उपयोग करने लगा ! वह अपने चेलों के मार्फत् आश्चर्यकर्म करने लगा और हर जगह सुसमाचार प्रचार करने के लिये निडर और साहसी बनाता रहा । सुसमाचार की घोषणा के द्वारा वह लोगों को शैतान के साम्राज्य से खींचकर अपने ही राज्य में प्रवेश कराता है ।(कुलिस्सियों 1:13)। जब तक हर एक घुटना न झुक जाए और हर एक जीभ यह अंगीकार न कर ले कि वही सच्चा प्रभु है तब तक कोई भी रूकावट उसे रोक नहीं सकेगी । (फिलिप्पियों 2:9–11,यशायाह 45:23)।

(3)एक प्रतिफल के रूप में अधिकार ।

यीशु को उद्धार के लिये किये गये परिपूर्ण कार्य के प्रतिफल स्वरूप यह असीमित अधिकार मिला ।(इफिसियों1:19–23, फिलिप्पियों 2:9–11; प्रकाशितवाक्य 5:5)। उसके प्रथम आगमन के समय से ही यीशु ने संसार को जीत लिया है और यह संसार लगातार जीते जाने की स्थिति में ही रहता है ।(यूहन्ना 16:33)।प्रेरित और उसके अनुयाइयों को यह मांग रखनी चाहिये कि हर एक क्षेत्र के हर एक व्यक्ति को यह मानना चाहिये कि यीशु मसीह ही राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है ।(प्रकाशितवाक्य17:14,19:16)

(2) महान आदेश (मत्ती 28:19)

प्रभु का महान अधिकार ही उस महान आदेश को संभव बनाता है

मत्ती 28:19–20 '' इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।''

{1} कदम बढ़ाएं

यीशु के शिष्य को इस बात की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये कि संसार के लोग उन तक आएं, पर उन्हें स्वयं कदम उठाते हुए संसार के लोगों तक पहुंचना चाहिये । उन्हें अपने आसपास के लोगों तक, अन्य शहरों के लोगों तक और अन्य देशों के लोगों तक पहुंचना चाहिये । बाईबल के आरंभ से ही परमेश्वर ने परिवार , और हर संस्कृति से लोगों को अपने लोगों में समावेश करने की मंशा रखी है ।(उत्पत्ति12:3)।

आरंभ से ही परमेश्वर ने जगत में खोए हुए लोगों से प्रेम रखा ।(यूहन्ना 3:16)। जगत के खोए हुए लोग परमेश्वर से अनभिज्ञ,पाप में दबे , परमेश्वर के सच्चे न्याय के आधीन हैं । परमेश्वर ने उन से बिना किसी जाति, राष्ट्रीयता ,भाषा या संस्कृति के भेदभाव से प्रेम किया.है ।(यूहन्ना 3:16)।

ये खोए हुए लोग ,जिनसे वह प्रेम करता है , उसी समय ,उसके अनन्त चुनाव के पात्र भी होते हैं ।(रोमियों 8:29–34,9:11–12,11:5 ,इफिसियों 1:4,2 थिस्सलुनीकियों 2:13–14, 2 तिमुथियुस 1:9–10, 1पतरस 1:1–2,प्रकाशितवाक्य 17:14)

चूंकि यीशु ने मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा परमेश्वर की पवित्र शर्त पूरी कर दी है ,परमेश्वर ने योजना बनाई कि यीशु के द्वारा मिलने वाले, उद्धार के संदेश को ,यरूशलेम से प्रारंभ कर जगत की हर जगह तक पहुंचाए ।(प्रेरितों के काम 1:8)।पहले तो प्रेरित थे, पर अब, सभी मसीही उसके संदेश वाहक हैं ।

(2) सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाना ।

महान आदेश की यह मुख्य क्रिया है ।अन्य क्रियाएं हैं ''जाओ,ष्बपतिस्मा दो,'' और ''आज्ञा मानना सिखाओ'' सहयोगी क्रियाएं हैं ।अतः इनमें भी हमें आदेशात्मकता दिखाई देती है । यह एक लगातार लागू रहने वाला आदेश है । एक शिष्य मसीही के रूप में पैदा नहीं होता परन्तु उसे अनुयायी बनाया जाता है । अन्य मसीहियों के द्वारा काम करते हुए नवीन रचना ,परिवर्तन.,उन्नति और फलवन्त करने के द्वारा परमेश्वर उसे शिष्य बनाता है । एक शिष्य यीशु का अनुयायी होता है जो आनुसरण करते हुए सीखता है । एक शिष्य के स्पष्ट गुण होते हैं जो बाईबल में दर्शाए गये हैं (मैनुएल 2 पाठ 23 देखें) । आदेश यह है कि समस्त देशों से अधिकतम् शिष्य बनाए जाएं । वे सुसमाचार प्रचार , जल का बपतिस्मा और यीशु की आज्ञा का पालन करने के द्वारा शिष्य बनाए जाते हैं ।

(3) पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो ।

<u>जल में बपतिस्मा देने का आदेश ।</u> यीशु ने आज्ञा दी कि नये विश्वासियों को जल में बपतिस्मा दें । जब लोग ईमानदारी से यीशु मसीह पर विश्वास लाते हैं ,अर्थात ,जब वे उसे अपने ह्रदय और जीवन में स्वीकार करते हैं ,वे यह दर्शा देते हैं कि उन्हों ने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लिया है ।(अर्थात् उन का नया जन्म हो गया है) (प्रेरितों के काम 11:14–18 , 15रू7– ।उन के मन का अंगीकार और उनके होंठों का इकरार (रोमियों10:9–10)यह दर्शाता है कि पवित्र आत्मा द्वारा मसीह की एक देह में,उन का बप्तिस्मा हो चुका है ,अर्थात, वे एक विश्व व्यापी मसीही कलीसिया के सदस्य बन गये हैं ।(1 कुरिन्थियों 12:12–13)।

<u>जल में बपतिस्मा की विधि।</u> जल का बप्तिस्मा पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का एक चिन्ह है ।कभी – कभी विश्वासी का जल से बपतिस्मा किया गया । इस का मतलब यह नहीं कि उन्हें जल में डुबाया गया ,क्योंकि इसका मतलब यह है कि फिलिप्पुस ने खोजे को जल में डुबाते हुए स्वयं भी डुबकी ली ,क्या जल में डुबने से ऊपर आने में उनका बपतिस्मा हुआ । हुआ यह था, कि वे उथले से गहिरे जल में गये । जब वे जल के मध्य खड़े हुए तब फिलिप्पुस ने जल लेकर खोजे पर उंडेला । फिर वे उथले जल से होकर बाहर आए (प्रेरितों के काम 8:38,39)। जब पौलूस खड़े होकर यीशु का नाम पुकार रहा था तब हनन्याह ने भी उसे घर में जल से बपतिस्मा दिया । उसके उपर जल के डालने से प्रतीकात्मक रूप से उसके पाप धुल गये ।(प्रेरितों के काम 22:16)। एक प्रतीक कि पवित्र आत्मा ऊपर से विश्वासियों पर उंडेला गया ।(तीतुस 3:5–7, प्रेरितों के काम 2:3,17,33 य10:44–45,11:15–16)।

<u>मसीही बपतिस्मा का अर्थ।</u> मसीही बपतिस्मा एक बाह्य चिन्ह और छाप है (रोमियों 4:11) कि यीशु मसीह उस विश्वासी का प्रतिनिधि बन गया है (रोमियों 5:17–19), और विश्वासी उसके आरंभ से अन्त तक किये गये परिपूर्ण कार्य में सहभागी बन गया है ।परिणाम स्वरूप विश्वासी मसीह के साथ मर गया है ,मसीह के साथ जी उठा है और मसीह के साथ स्वर्ग में विराजमान है ।(रोमियों 6:3–5 ,इफिसियों 2:4–7)। वह क्षमा प्राप्त कर धर्मी ठहराया गया है (रोमियों 5:1), तथा अनुग्रह और प्रेम के आधीन खड़ा है (रोमियों 6:14,8:35,39),वह देह के पुनरूत्थान में सहभागी होगा (फिलिप्पियों 3:20,21) और कभी भी तिरस्कृत न होगा (रोमियों 8:1), क्योंकि उसके पास अनंत जीवन है (यूहन्ना 3:16,5:24)

<u>मसीही बपतिस्मा तीन बातों का प्रतीक होता है ।...</u>

- 'एक विश्वासी की आत्मिक स्थिति और जीवन शैली ष्मसीह मेंष् होती है तथा न्याय की दृष्टि से वह मसीह की धार्मिकता और पवित्रता में सहभागी होता है ।(1 कुरिन्थियों 1:30) । यह सब पूर्व प्राप्त होता है ।
- 'एक विश्वासी का नया जन्म हो चुका है (एक नया आत्मिक स्वभाव प्राप्त कर चुका है ।)(तीतुस 3:5–7)और वह अभी ,आनेवाले समय में और अब से हमेशा एक धार्मिक और शुद्ध जीवन जी सकता है ।(रोमियों6:1–8), वह यीशु का एक चेला बन सकता है ,(मत्ती 28:19),मसीह की देह का एक अंग बन सकता है (1 कुरिन्थियों 12:12–13) और परमेश्वर की वाचा धारक लोगों में शामिल हो सकता है (गलातियों3:26–29)। यह उसके वर्तमान की एक सच्चाई होती है ।
- विश्वासी अन्ततः आत्मा और देह में मसीह के समान होगा ।(1यूहन्ना 3:1–3, फिलिप्पियों 3:20–21)। यह भविष्य की आशा है ।

जल द्वारा मसीही बपतिस्मा पाप क्षमा का चिन्ह और छाप है(प्रेरितों.के काम 2:38) और पाप धुल चुके हैं (प्रेरितों के काम 22:16), अर्थात इस बात का चिन्ह और छाप है कि परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराए जा चुके हैं ।

जल द्वारा मसीही बपतिस्मा इस बात का चिन्ह और छाप है कि त्रिएक परमेश्वर से एकरूप हो चुके ,जिसने अपने दिव्य स्वभाव में एक परमेश्वर में तीन विभेदों को दर्शा दिया है ।(मत्ती28:19)। जल द्वारा मसीही बपतिस्मा इस बात का चिन्ह और छाप है कि यीशु मसीह में एक हो गये हैं (प्रेरितों के काम 2:38)और इसी कारण परमेश्वर में सिद्ध किये गये भूतकाल,वर्तमान काल तथा भविष्यकाल के उद्धार के कार्य में सहभागी हो गये हैं ।(रोमियों 6:1–8 इफिसियों 2:5–6)। जल द्वारा मसीही बपतिस्मा परिवर्तन का चिन्ह और छाप है रूआपका सोच बदल गया है ,आप की दिशा बदल गयी है ,आपका व्यवहार बदल गया है और आपका पुनर्निर्माण हो गया है ।(प्रेरितों के काम 3:19), पाप क्षमा हो गये(प्रेरितों के काम 2:38) ,पाप मिटा दिये गये (प्रेरितों के काम 3:19) या पाप धो दिये गये हैं (प्रेरितों के काम 22:16) ।मत्ती 28:19 के अनुसार जल द्वारा मसीही बपतिस्मा इस बात का भी चिन्ह और छाप है कि त्रिएक परमेश्वर के कामों में आप की सहभागिता है अर्थात संसार के हर देश में अपने शिष्य बनाना । संक्षेप में रू जल द्वारा मसीही बपतिस्मा आत्मा से बपतिस्मा का चिन्ह और छाप है (प्रेरितों के काम 10:47–48)।

बाईबल स्पष्ट रूप से जल द्वारा बपतिस्मा की शिक्षा देती है और हर मसीह को इसे लेने का आदेश देती है ,लेकिन बाईबल जल द्वारा बपतिस्मा की कोई विधि नहीं बताती !

(4)यीशु ने जो आज्ञा दी उसे मानना सिखाओ।

एक विश्वासी बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद, यीशु मसीह की शिक्षाओं को सुनकर और उन बातों को मानकर लगातार आगे बढ़ता रहता है। इस से यह स्पष्ट होता है कि यीशु मसीह के बारे में जानना ही केवल काफी नहीं है। विश्वासियों को उनके ज्ञान के अनुसार व्यवहार भी करना चाहिए।

3.महान प्रतिज्ञा (मत्ती 28:20)

महान प्रतीज्ञा महान आदेश को मूर्तरूप देती है । यह मात्र एक प्रतीज्ञा नहीं है ।यह एक सच्चाई है । सच्चाई यह है कि यीशु मसीह दिन भर,हर दिन ,संसार के अंत तक अपने शिष्यों के साथ है । जब यीशु कहते हैं 'देखो' तो उनका तात्पर्य है 'ध्यान से देखो'। महान आदेश कोई सहज कार्य नहीं है। यीशु की उपस्थिति की सच्चाई के बिना महान आदेश असंभव हो जाता । अब यह न केवल संभव ही है अपितु आज्ञाकारी विश्वासी के लिये एक वास्तविकता भी है ।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** प्रभुता: रोमियों 12:1-2.
3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) ***[संसार में जीवन बिताना]*** **संसार में आत्मा के फल : गलातियों 5:13-26**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए गलातियों 5:13-26 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर गलातियों 5:13-26 को एक साथ पढं।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

***ध्यान दें।* इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस मं बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँट गयें विचार एक ही समान हों।

खोज 1. पापी स्वभाव का प्रकटीकरण ।

हमारे भीतर विद्यमान पापी स्वभाव भौतिक रीति से यौन अपराध और अति के द्वारा , आत्मिक रीति से मूर्तिपूजा और जादू टोना और सामाजिक पाप जैसे स्वार्थ और झगड़े के द्वारा प्रकट हो जाता है ।

खोज 2 भीतर विद्यमान पवित्र आत्मा का प्रकटीकरण ।

भीतर विद्यमान पवित्र आत्मा स्वयं को आत्मा के फल के द्वारा प्रकट करता है । जब आप मसीही बनते हैं , तब आप यीशु मसीह के होते हैं,और परमेश्वर अर्थात मसीह का आत्मा ,या पवित्र आत्मा आपके शरीर के भीतर रहता है । यदि आप मसीही हैं तो मसीह आप में है ! तब आप बाध्य होते हैं: आपको पवित्र आत्मा के नियंत्रण में जीना है ,अर्थात ,आप को आत्मा को यह अनुमति देना है कि वह आपकी अगुवाई करे और आप में आत्मा का फल लगे । आत्मा का ही आप पर नियंत्रक प्रभाव होना चाहिये तथा आप को सहर्ष ,स्वेच्छा से और आभारपूर्वक आत्मा के साथ सहयोग करना चाहिये । आत्मा के फल के द्वारा ही ,जो आत्मा आप को देता है , आप अपनी उच्छंखल शारीरिक कामनाओं पर विजयी हो सकते हैं । आत्मा का कार्य मूल आत्मिक गुणों से प्रकट होता है ,जैसे प्रेम आनंद और शांति ,ऐसे सद्गुणों से जो सामाजिक सम्बन्धों में जैसे धीरज, कृपा, भलाई तथा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता में अन्य लोगों के प्रति नम्रता , और स्वयं के प्रति आत्म संयम से प्रकट होता है ।

कदम 3 प्रश्न व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?
आईये हम 1 तीमुथीयुस 6:3-19 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।
लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)
चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

5:13–15

प्रश्न 1. सच्ची स्वतंत्रता की प्रकृति कैसी होती है ?

ध्यान दें,

वास्तविक स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं कि आप जो चाहे कर सकते हैं ।

संसार में कई लोग मन की स्वतंत्रता पर विश्वास रखते हैं ।वे सोचते हैं कि स्वतंत्रता का मतलब है कि आप जो चाहे सोच या तय कर सकते हैं , जो चाहे करने के लिये स्वतंत्र हैं , कुछ भी कह सकते हैं और कुछ भी बन सकते हैं । स्वतंत्रता का मतलब है कि आप अपने प्राकृतिक सोच के अनुसार चलें ,विशेषकर आपकी प्राकृतिक पापमय लालसाओं में।

वास्तविक स्वतंत्रता का अर्थ है कि आप जो सही है , उसे करने के लिये स्वतंत्र किये गये हैं ।

बाईबल के अनुसार वास्तविक स्वतंत्रता कभी भी यह छूट नहीं देती कि आप अपनी शारीरिक कमनाओं और लालसाओं के अनुसार चलें । इसके विपरीत वास्तविक स्वतंत्रता में आप वही करते हैं , जो वांछित होता है ! बाईबल में वास्तविक स्वतंत्रता है हम यीशु की शिक्षा के अनुरूप चलें । बाईबल में वास्तविक स्वतंत्रता यीशु से अनुबंधित है ,इसीलिये उसकी इच्छानुरूप कार्य करने में सक्षम है । यूहन्ना 8:32–36 में यीशु कहते हैं ।''यदि तुम मेरी शिक्षाओं में बने (पालन) रहो ,तो तुम सचमुच मेरे चेले ठहरोगे ,तब तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा ....मैं तुम से सच कहता हूं कि जो पाप करता है वह पाप का दास है ... यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे तो तुम सचमुच स्वतंत्र होगे ।''

परमेश्वर ने मनुष्य को ऐसा बनाया है कि वह कभी भी हर व्यक्ति और हर बात से स्वतंत्र नहीं हो सकता है ! हर मनुष्य किसी न किसी व्यक्ति या वस्तु से बंधा रहता है । वे सभी लोग जो यीशु से स्वतंत्र रहना चाहते हैं , वास्तव में पाप की शक्ति के गुलाम होते हैं ! पाप के दास लोग परमेश्वर की व्यवस्था को न तो स्वीकार करते हैं ,और न ही कर सकते हैं ।(रोमियों 8:7–8) ।वे यह सोचकर कि वे स्वतंत्र हैं , मनमानी करते हुए पापमय स्वाभाव में लिप्त रहते हैं ,लेकिन वे कभी स्वतंत्र होते ही नहीं !!

इसके विपरीत ,सभी लोग, जो यीशु जी से सम्बद्ध हैं ,वे सभी पाप से सचमुच स्वतंत्र होते हैं ! वे यीशु के गुलाम मात्र नहीं ,परंतु इससे अधिक होते हैं ! वे परमेश्वर के परिवार के होकर ''परमेवर के बच्चे'' या ''परमेश्वर के बेटे और बेटी'' कहलाते हैं ,और यह शुद्ध आत्मिक अर्थ में होता है ।

सच्ची स्वतंत्रता पारस्परिक प्रेमपूर्ण सेवाभाव में है ।

बाईबल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आज्ञा है ''मरकुस 12:30–31'' और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।'' और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखनारू इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।''मूसा और नबियों की व्यवस्था इसी पर आधारित है'' ।(मत्ती 22:37–40) ।यदि सच्ची स्वतंत्रता यह है कि आप उचित वांछित कार्य करें ,तब वास्तविक स्वतंत्रता है परमेश्वर से प्रेम ,अन्य लोगों से प्रेम और स्वयं से प्रेम करना है । मसीही प्रेम का स्वरूप है कि वह स्वार्थपरक नहीं (1 कुरिन्थियों 13:5)अपितु अन्य लोगों की सेवा में है ।

5:16.

प्रश्न 2 .एक नया जन्म पाए मसीही की कौन सी दो बड़ी जिम्मेदारियां हैं ।

ध्यान दें।

हर विश्वासी की यह ज़िम्मेदारी है कि वह पवित्र आत्मा पर निर्भर होकर जिए ,अर्थात, यीशु मसीह पर निर्भरता ।इसका मतलब है कि आप का एक स्वामी और प्रभु है ।

हर मसीही की यह जिम्मेदारी है कि पापमय कामनाओं से न हारे पर उन्हें समाप्त कर दे । (रोमियों 8:13).इसका मतलब यह है कि हम सतत् रूप से आत्मिक संघर्ष में रत रहते हैं ।

5:17

प्रश्न 3 . एक मसीही अपने भीतर इतने बड़े द्वन्द का सामना क्यों करता है ?

ध्यान दें।

एक उनमुक्तितावादी ,व्यवस्थावादी और विश्वासी में अंतर ।

'उनमुक्तितावादी – वह अपनी स्वाभाविक कामनाओं पर चलता है और उसका विवेक उसे उसके पापों के विषय में दोषी नहीं ठहराता । पाप पर विजय पाने की उसे कोई इच्छा नहीं होती ।

व्यवस्थावादी – वह परमेश्वर के अनुग्रह को नहीं चाहता है ,पर अपनी ही शक्ति से व्यवस्था का पालन कर ,पाप नहीं करना चाहता है । परंतु उसे पापों पर विजय नहीं मिलती और उसे निश्चित सर्वोत्तम विजय की अनुभूति नहीं होती ।

'विश्वासी के भीतर एक पीड़ादायक द्वन्द होता है , पर इसके उपरांत भी उस के भीतर एक उत्तम निश्चय होता है , कि परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया है, और अन्ततः वह सभी पापों पर विजयी होगा ।

केवल मसीहियों में आत्मिक द्वन्द ।

जब तक पवित्र आत्मा परमेश्वर की नैतिक और आत्मिक आज्ञाओं को एक व्यक्ति के लिये सार्थक नहीं बना देता ,तब तक वह अपने पापों के प्रति बेपरवाह रहता है । वह बिना किसी दोषभावना के झूठ ,चोरी ,छल और हत्या करता है ।(रोमियों 2:14,15) । या फिर वह आत्मकेंद्रित, स्वधर्मी और बिना किसी लाज के , परमेश्वर से स्वतंत्र होता है ।

परन्तु जब एक व्यक्ति नया जन्म पा लेता है ,अर्थात ऊपर से जन्मा , तो पवित्र आत्मा उसके ह्रदय, मन और देह में वास करता है । इसके पश्चात् यदि वह झूठ बोलता या छल करता है तो उसमें दोषभावना आती है । तब यदि वह स्वार्थी बनकर अथवा परमेश्वर का लिहाज किये बिना, कोई काम करता है तो उसे शर्मिंदगी महसूस होती है ।उसके भीतरी पापमय स्वभाव और पवित्र आत्मा के मध्य एक वास्तविक द्वन्द चलता है । यदि एक विश्वासी अपने भीतर अपनी पापमय लालसाओं और पवित्र आत्मा के मध्य द्वन्द को पाता है, तो उसे जान लेना चाहिये कि उसका नया जन्म हो गया है , और परमेश्वर उसके भीतर काम कर रहा है ।

भीतरी द्वन्द की प्रकृति।

आत्मिक द्वन्द में आपको यह बोध रहता है ,कि जो भला काम आप करना चाहते हैं वह नहीं कर पा रहे हैं , और कभी – कभी आप वह काम कर जाते हैं जो आप करना नहीं चाहते हैं ।(रोमियों 7:19) । आप परमेश्वर की नैतिक और आत्मिक (परमेश्वर का सत्य)आज्ञाओं से प्रसन्न रहते हैं , परंतु उसी समय आप अपने भीतर विद्यमान बुराई से भी घृणा करते हैं ।(रोमियों 7:15,20)। पुराना पापमय स्वभाव आपको गुलाम बनाता है ,अर्थात ,यह महसूस कराता है कि आप भीतर कार्यरत सामर्थ के गुलाम हैं और उससे पार नहीं पा सकते । (रोमियों 7:23)। यह सच्चाई, कि आप अपने भीतर एक आत्मिक द्वन्द में है , इस बात का प्रमाण है कि पवित्र आत्मा आपके भीतर काम कर रहा है ! द्वन्द तो सुखद नहीं होता पर यह अहसास कि पवित्र आत्मा भीतर कार्यरत है ,तसल्ली देता है ।

5:18

प्रश्न 4 इस बात का क्या अर्थ होता है कि एक मसीही व्यवस्था के आधीन नहीं परन्तु आत्मा के चलाए चलता है ?

ध्यान दें।

1) बाईबल के अनुसार व्यवस्था परमेश्वर की धर्ममय आवश्यकता है ।

अर्थात, हर व्यक्ति सिद्ध जीवन जिये और हर भूल का उचित दंड मिले । क्योंकि परमेश्वर सौ प्रतिशत पवित्र और धर्मी है तो उसकी अपेक्षा और मांग है कि सभी सौ प्रतिशत सिद्ध बनें ,और वह हर आज्ञा को तोड़ने का सौ प्रतिशत दण्ड दे ।

यदि परमेश्वर सौ प्रतिशत आज्ञापालन का आदेश न दे और आज्ञा तोड़ने वाले को दंड न दे , तो वह स्वयं पवित्र और धर्मी नहीं ठहरेगा ।

बाईबल में लिखा है कि ''जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह श्रापित है(गलातियों 3:10) ।'' परमेश्वर सौ प्रतिशत से कम सिद्धता नहीं चाहता ।क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा। (याकूब 2:10) ऐसा व्यक्ति इसलिये दोषी ठहरता है क्योंकि उसने नियम नहीं पर नियम देने वाले स्वयं परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया । अतः हर प्राकृतिक मनुष्य कानूनन् व्यवस्था के आधीन है ।

2) सभी धार्मिक व्यक्ति भी कानूनन् व्यवस्था के आधीन रहते हैं ।

कई धर्म के लोगों की यह मन्यता है कि न्याय के समय परमेश्वर अपनी न्याय की तराजू में हर एक व्यक्ति के भले और बुरे कामों को तौलेगा । इन लोगों की यह मान्यता है कि यदि भले काम, बुरे कामों से अधिक निकले, तो हो सकता है कि परमेश्वर उन्हें क्षमा करे (धर्मी ठहरा कर बचा ले) और स्वर्ग में एक जगह दे दे । वे दिन में कई बार प्रार्थना करते हैं,वे लगातार उपवास करते हैं, वे अपने धर्म गुरूओं के प्रवचन सुनते हैं , वे यरूशलेम जैसे धार्मिक स्थलों की तीर्थयात्रा करते हैं , वे दान देते और अन्य भले काम करते हैं ,क्योंकि उन्हें यह प्रबल आशा रहती है कि उनके धर्म के काम और अन्य भले काम ,न्याय के दिन में उनकी धार्मिक उदासीनता और बुरे कामों से अधिक भारी हो सकेंगे ।

जब कि बाईबल यह बताती है कि इस तरह के कार्य पूर्णतः व्यर्थ होते हैं ! कोई भी व्यक्ति व्यवस्था के कामों को करने के द्वारा धर्मी नहीं ठहर सकेगा (गलातियों 2:16) क्योंकि कोई नहीं जो व्यवस्था का पूर्ण पालन करता है , और कोई कर भी नहीं सकता है ।(रोमियों 8रू7,8)। सभी मनुष्य परमेश्वर के मानक के सामने अयोग्य ठहरते हैं ।(रोमियों 3:10–12,23)। वे सभी जो यह सोचते और सिखाते हैं कि धार्मिक नियमों का पालन कर लोग धर्मी (क्षमा,उद्धार) ठहरते हैं ,परमेश्वर द्वारा शापित होते हैं ।(गलातियों 3:10–13)।

(3) मसीही लोग वैधानिक रीति से व्यवस्था के आधीन नहीं रहे ।

परमेश्वर का प्रेम, परमेश्वर की धार्मिकता की प्रतिपूर्ति करता है।क्योंकि परमेश्वर धर्मी ही नहीं अपितु प्रेम भी है ।उसने स्वयं ही धार्मिकता की समस्त मांग को पूरा कर पापी को धर्मी ठहरा दिया ।परमेश्वर ने स्वयं ही यीशु मसीह में मानव स्वाभाव को धारण किया ,और हर एक विश्वास करने वाले का स्थान लिया और इस प्रकार मानव की सब से बड़ी समस्या को हल कर दिया । जहां एक ओर यीशु मसीह ने धरती पर 100 प्रतिशत धर्मी और पवित्र जीवन जिया । केवल यीशु ही सिद्ध और पवित्र था ।(इब्रानियों 4:15) । वहीं दूसरी ओर उस ने परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को पूरा किया , कि पाप के हर दंड को विश्वासियों के स्थान पर मरने के द्वारा , उन के पापों का 100 प्रतिशत बलिदान और प्रायश्चित बन गया ।(2 कुरिन्थियों 5:21)।

परमेश्वर ने मसीह में मसीह पर विश्वास करने वालों को अति जटिल बातों से बचाया है /(प्रेरितों के काम 13:39)।

वे जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं ,यह मानते हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर वे कभी भी धर्मी (क्षमा और उद्धार) नहीं ठहर सकते हैं ।वे मानते हैं कि उन्हें एक उद्धारकर्ता चाहिये ,जिसने उन के स्थान पर परमेश्वर के सारे नियम का पालन किया हो ,और उनके पापों का पूरा प्रायश्चित किया हो । यीशु मसीह ने अपने सभी विश्सावासियों की, परमेश्वर की व्यवस्था की ,आवश्यकता और मांग को पूरा किया है !(मत्ती 5:17)। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा मसीह ने विश्वासियों को व्यवस्था के श्राप से छुटकारा दिया है !(गलातियों 3:13)। यीशु मसीह अपने विश्वासियों को, पाप के दास बनाने वाली, दमनकारी सामर्थ से स्वतंत्र कर दिया है !(रोमियों 6:6) यीशु मसीह अपने विश्वासियों को ,पाप से लगातार पराजित होने पर ,विजय प्रदान करते हैं ।(1 कुरिन्थियों 10:13)।

यीशु मसीह के विश्वासी अब व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरने का प्रयास हीं करते ।यीशु मसीह के विश्वासी यह मानते हैं कि यीशु ने उनके स्थान पर एक धर्मी जीवन जिया ,कि यीशु मसीह ने उनके स्थान पर पाप के दंड को सहा ,और यह कि यीशु मरा और जीवित हो उठा और सर्वदा जीवित है, ताकि वे भी पुनरूत्थित होकर सदैव जीवित रहें ! एक मसीही बनने से पहले लोग व्यवस्था के आधीन रहते हैं, लेकिन एक मसीही बन जाने के बाद वे व्यवस्था के आधीन नहीं होते । इसका मतलब है कि वे अब परमेश्वर की व्यवस्था के पालन के द्वारा (क्षमा ,मुक्ति) धर्मी नहीं ठहरते, हालांकि यीशु ने यह, उनके लिये कर दिया है । अब मसीहियों के जीवन में व्यवस्था जीवन के नियंत्रण की अधिकारी नहीं रही ,क्योंकि पवित्र आत्मा उनके भीतर रहकर नियंत्रण करता है ।(गलातियों 5:18)

(4) पर मसीही अभी भी परमेश्वर के नैतिक नियमों का पालन करते हैं ।

यह सत्य है कि मसीही व्यवस्था के पालन से धर्मी नहीं ठहरते (क्षमा,उद्धार) , पर इसका मतलब यह नहीं कि वे यह पर्वाह नहीं करते कि व्यवस्था क्या कहती है ।नया जन्म पाए मसीही, फिर भी परमेश्वर के नैतिक और आत्मिक नियमों का पालन करते हैं ,(दस आज्ञाएं) (मरकुस 12:29–31; रोमियों 13:8–10; गलातियों 5:14) ।फर्क बस इतना है कि अब व्यवस्था धर्मी (क्षमा,मुक्ति) ठहराए जाने का साधन नहीं ,परंतु एक दिग्दर्शक (दिशासूचक, नक्शा या ज्योति) है जो एक मसीही को धार्मिकता के जीवन (क्षमा, मुक्ति अभी) में आगे बढ़ने में सहायक है ।

5:19–21

प्रश्न 5 आपका पापमय.स्वभाव अभी भी आप पर नियंत्रण रखता है, इसके स्पष्ट सूचक संकेत क्या.हैं ?

टिप्पणी .. पापमय स्वभाव के सपष्ट सूचक संकेत इस प्रकार हैं ,जिनका पवित्र आत्मा विरोध नहीं करता.है ।

(1) यौन सम्बन्धी कुटिलताएं .

- यौन दुराचार – इसका तात्पर्य है वह सभी विचार ,वचन या कर्म जो विवाह – सम्बन्ध के पूर्व या परे किये जाते.हैं । इसका आशय समस्त अनैतिक यौन सम्बन्ध ,जैसे व्यभिचार (1कुरिन्थियों 5:1:6:13,18,:7:2) ।अन्यजातियों में यौन दुराचार का आध्यत्मिक दुराचार से निकट सम्बन्ध.होता है ,उदाहरण के लिये मूर्तिपूजा ।(कुलिस्सियों 3:5)।
- अशुद्धता – इस शब्द का अर्थ है समस्त विचार ,वचन और कर्म जो अप्राकृतिक यौनाचार से सम्बद्ध हैं , जैसे कि पोर्न(नग्र) चित्र,यौन परिकल्पनाएं , गंदे चुटकुले ,प्रेम प्रदर्शन और स्पर्श (1थिस्सुलीनीकियों 4:7)
- अय्याशी – इस शब्द का मतलब है यौनोत्तेजना, अशोभनीय और बेधड़क होना । इसमें अशोभनीय आचरण ,और समस्त प्रकार की यौन अति तथा कुरीति जैसे वेश्यावृति ,समलैंगिकता , स्त्री समलैंगिकता ,घनिष्ठ सम्बंधियों के मध्य यौनाचार,अप्राकृतिक यौन ,और पशुगमन का समावेश होता है ।(लैव्यवस्था18:6,20,22,23; 20:10,13,15,17: इफिसियों 4:19; 2पतरस2:7)

(2) झूठे ईश्वरों सम्बन्धी कुटिलताएं

मूर्तिपूजा – इस शब्द का अर्थ है आकृतियों की आराधना करना तथा उन से जुड़े कर्मकाण्ड करना ,जैसे मूर्ति को चढ़ाया गया मांस खाना ,जब कि उनका विवेक इस का विरोध करता है ,मंदिर में प्रचलित व्यभिचार तथा अशोभनीय या नग्न नृत्य । निश्चित रुप से बाईबल द्वारा प्रकट एक सच्चे परमेश्वर का स्थान , किसी वस्तु या व्यक्ति को दे दिया जाता है । किसी अन्य धर्म द्वारा अविष्कृत देवता की आराधना मूर्तिपूजा है , अनीश्वरवाद अपने ''अहम्'' को ही ''ईश्वर ''मानना है ।

जादू टोना – इस का अर्थ है वे जादुई विधियां या टोना , जिसमें गुप्त शक्तियों के नाम पर , शरीर पर कुछ बांधा जाता है या विशेष स्थानों पर रखा जाता है,चौघड़िया या धार्मिक वाक्य दीवारों पर लिखे जाते हैं और समय – समय पर मंत्रोच्चारण किया जाता है ।(निर्गमन 7:11) ।इसमें ज्योतिष और राशिफल भी सम्मिलित होता है ।(यशायाह 47:9–13)। जादू टोना करने वाले परामानव शक्ति रखने का दावा करते हैं ।(प्रेरितों के काम 8:9; 13:8; 19:13,19; प्रकाशितवाक्य 9:21; 21:8) जब परमेश्वर में विश्वास का स्थान जादू टोना ले ले, तो इसे एक तरह की मूर्तिपूजा कह सकते हैं ।

(3) बैरभाव सम्बन्धी कपट

घृणा – इस शब्द का वास्तविक तात्पर्य है शत्रुता या विरोध ।(इफिसियों 2:16)

कलह – इसका मतलब है झगड़ना या परस्पर विरोध ।(1 तिमुथियुस 6:4 , तीतुस 3:9)

जलन – इस शब्द का अर्थ है अत्याधिक स्वत्व – बोध । इसमें झगड़े का आशय है, जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति या विषय के प्रति इतनी अंधभक्ति रखता है , कि जब उस व्यक्ति या विषय से अलग किसी का नाम लिया जाता है , तो वह बहुत तकरार करने लगता है । जलन रखनेवाला व्यक्ति अपने हीरो के बहुत करीब रहते हुए उसपर सर्वाधिकार रखना चाहता है ।

क्रोध के दौरे – इस शब्द से तात्पर्य है अति क्रोधित होना या क्रोध की अग्नि में जलना ।ऐसा तब होता है जब किसी की कोई कामना पूरी नहीं होती अथवा उसकी इच्छा पूरी होने में रूकावट डाली जाती है ।

स्वार्थी महत्वाकांक्षा – इस शब्द का अर्थ हे कि गलत तरीके से अपने लाभ के राजनैतिक पद को प्राप्त करने की होड़ । दुर्भाग्यवश कलीसिया में भी कुछ लोग ऐसे होते हैं ,जो किसी पद या स्थान को अपने लिये पाने में लगे रहते हैं (फिलिप्पियों 1:17; 2:3),और ऐसा करने के लिये वे अनुचित तरीके अपनाते हैं , जैसे वोट हासिल करने के लिये निजी और सार्वजनिक रूप से झूठे वायदे करना ।

मतभेद – इससे तात्पर्य है टुकड़े या मतभेद पैदा करना ।यह शब्द बाईबल कि गलत शिक्षा देने से भी जुड़ा है ।(रोमियों 16:17)।

गुटबाजी – इस शब्द से आशय है गुट,समूह या मतावलम्बन ।और यह आगे चलकर कट्टरता या विधर्म को पैदा करता है ।

डाह – जब कि जलन में अपना कुछ खो देने का भय रहता है लेकिन डाह में दूसरे की चीजें देखकर अप्रसन्नता होती है ।डाह के कारण ही हाबिल की हत्या हुई य युसूफ कुएं में डाला गया य कोरह और उसके सहयोगियों ने अपने आत्मिक अगुवे से विद्रोह किया य शाऊल ने दाऊद का पीछा किया य उड़ाऊ बेटे के दृष्टांत में बड़े भाई ने अपने पिता से कटु शब्द कहे यऔर मसीह को क्रूसित किया । वास्तविक मसीही प्रेम कभी डाह नहीं करता है ।(1कुरिन्थियों 13:4)

(4) नशे सम्बन्धी कुटिलता

पियक्कड़पन– यूनानी शब्द का अर्थ है मतवालापन अथवा बढ़–चढ़ कर पीना । बाईबल शराबखोरी को एक बीमारी ही नहीं परन्तु पाप भी मानती हे । जब भी नशे की व्यक्तिगत जिम्मेदारी को कम या नजर अंदाज कर दिया जाता है , तब सभ्यता पतन की ओर बढ़ते हुए , अन्ततः नाश हो जाती है ।

उनमुक्तता – इस शब्द से आशय है अत्याधिक उत्सवधर्मिता,शराबखोरी या रंगरेली मनाना । मूल रूप से मशाल लेकर सड़कों पर जुलूस निकाला जाता था ,आनंद गीत गाते थे और , शराब के देवता बकस या डायोनिसस के सम्मान में महाभोज किया जाता था । इसका आनंद लेने वाले खूब मांस खाते ,छक कर शराब पीते और बहुत शोर करते थे । कई नये मसीही , विश्वासी बनने से पहले, इसमें बढ़ –चढ़ कर भाग लेते थे ।

(5) एक गंभीर चेतावनी

पौलूस प्रेरित यह चेतावनी देते ं कि इस प्रकार का जीवन यापन करने वाले परमेश्वर के राज्य वारिस न होंगे । उनके विरोधियों के वचन ष्आओ बुराई करें कि भलाई पैदा होष् निश्चित ही एक झूठ था ।(रोमियों 3रू8 य 6रू1) जब कि कोई भी व्यक्ति भले काम करने के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता तो निश्चित ही इन बुरी बातों के द्वारा भी कोई परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता ।यीशु मसीह के एक नये विश्वासी को अंधकार के सभी कामों को अलविदा कह देना चाहिये ।आन्यथा वह यह साबित कर देता है कि वह अभी भी ज्योति में नहीं चल रहा है ।(1 कुरिन्थियों 6:11; इफिसियों 5:7–12)।

5:22–23

प्रश्न 6 – इस सत्य के क्या प्रकट प्रमाण हैं कि पवित्र आत्मा आप पर नियंत्रण रखता है ?

ध्यान दें। नया जन्म पाए ,पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित जीवन के संकेत इस प्रकार हैं ।

(1) आत्मा का फल आत्मिक विशेषताएं हैं ।

- प्रेम – यह सब से महत्वपूर्ण मसीही सद्गुण है । यह वह प्रेम नहीं जो एक स्त्री–पुरूष के मध्य होता है ।यह वह लगाव भी नहीं जो माता –पिता कि अपने बच्चों के प्रति होता है । यह वह मित्रता भी नहीं जो मित्रों के बीच होती है । पर यह वह प्रेम है जो परमेश्वर ,मसीह में, विश्वासियों से रखता है (रोमियों 8:39) ,और जो विश्वासी,मसीह में परमेश्वर से,और एक दूसरे से रखते हैं । इस प्रेम के आत्म – त्यागी स्वरूप का वर्णन 1 कुरिन्थियों 13:1–8 में मिलता है ।(मैनुएल 2 ,पाठ 14 का बाईबल अध्ययन देखें)

- आनंद – इस शब्द का अर्थ है – प्रसन्न चित्त होकर खुशी मनाना ।विश्वासियों को प्रसन्न चित्त होकर परमेश्वर की आज्ञा पालन करने से यह मिलता है । विश्वासी जन अत्यन्त दबाव में भी आनंदित रह सकते हैं ,क्योंकि वे जानते हैं कि उनके जीवन में सारी बातें मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती हैं ।(रोमियों 8:28) ।
- शांति – जहां एक ओर इस शब्द का अर्थ होता है लड़ाई,झगड़े, युद्ध,भय और चिढ़ का न होना, वहीं दूसरी ओर इस का अर्थ होता है परमेश्वर की सामर्थ में, टूटे हुए सम्बन्ध और परिस्थितियों को चंगा करना ।

(2) आत्मा का फल सामाजिक विशेषताएं हैं ।

- धीरज – इस शब्द का अर्थ है आपको क्रोधित करनेवाले,विरोध या सताने वाले लोगों के प्रति धीरज रखना ।धीरज क्रोध में जलता नहीं ।धीरज लम्बे समय तक,अन्य लोगों से आहत होने पर भी सहता रहता है।
- कृपा – इस शब्द का अर्थ है दया, सज्जनता या कोमलता जो विशेषकर महिलाओं (लूका 13:10–13) बच्चों (लूका 18:15–17) और पापियों (लूका 23:24) के प्रति होती है ।
- भलाई – इस शब्द का अर्थ है पवित्र आत्मा द्वारा रचित हर विवरण की नैतिक और आत्मिक दक्षता । इसका मतलब है सीधी चाल (इफिसियों 5:9) तथा उदारता (गलातियों 5:22)।

(3) आत्मा का फल तीन प्रकार के सम्बन्धों में सद्गुण।

- विश्वासयोग्यता – इस शब्द का अर्थ विश्वास भी हो सकता है ,लेकिन सद्गुणों के इस क्रम में विश्वासयोग्यता या वफादारी कहा जा सकता है ।
- सज्जनता – इस शब्द का अर्थ है लिहाज ,सौजन्य, नम्रता या विनम्र समर्पण ।
- आत्म– नियंत्रण – इस शब्द का अर्थ है यौनाचार में आत्मसंयम। इसका मतलब है भावना और वासना पर नियंत्रण रखना ।

प्रश्न 7 . आत्मा के फल के विरूद्ध कोई आज्ञा नहीं । इसका क्या अर्थ है ?

ध्यान दें। पवित्र आत्मा द्वारा प्रभाव में लाए गये आत्मिक और सामाजिक सद्गुण के विरोध में कोई नियम नहीं ।नियम सामान्यतः कुछ बातों पर रोक लगाते हैं ।जब पौलूस कहते हैं कि इनके विरूद्ध कोई व्यवस्था नहीं तो वे यह कहते हैं कि इन सद्गुणों (आत्मा के फल) द्वारा समस्ता अवगुणों(पापमय स्वभाव के कार्य) पर जय प्राप्त करें ।

हालांकि , मसीही लोग पाप के स्वभाव पर जय पाने का निरंतर प्रयास नहीं करते । वे तो केवल पवित्र आत्मा पर ध्यान देते हैं जो उन में कार्य करता है , और आत्मा के सद्गुणों पर चलते हैं (गलातियों 5:16,18,25)। वे अपना ध्यान यीशु पर और स्वर्ग की सच्चाईयों पर लगाते हैं (रोमियों 7:25; कुलिस्सियों 3:1–4) ।वे अपना ध्यान प्रेम पर लगाते हैं जो व्यवस्था की उत्तम बातों का सार है ।(गलातियों 5:14)।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम गलातियों 5:13-26 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. गलातियों 5:13-26 से इस्तेमाल की जाने वाली सम्भव बातों के उदाहरण।

5:13 स्मरण रखें कि परमेश्वर ने आपको पाप की शक्ति का दास होने के लिये नहीं, परंतु मुक्त होकर दूसरों को प्रेम करने और उनकी सेवा करने के लिये बुलाया है ।

5:15 स्मरण रखें कि प्रेम के अभाव के कारण लोग एक दूसरे का नाश करते हैं ।(जैसे ..युद्ध)

5:16 केवल.जब आप पवित्र आत्मा के नियंत्रण में रहेंगे तभी आप अपने पापमय स्वभाव की कामनाएं पूरी नहीं करोगे

5:17 स्मरण रखें कि पवित्र आत्मा सदैव ही पापमय स्वभाव के कामों के विरोध में ही रहता है ।

5:24 स्मरण रखें कि सच्चे मसीही ,पापमय स्वभाव की लालसाओं और कामनाओं को क्रूस पर चढ़ा चुके हैं ।

(2) गलातियों 5:13–26 के आधार पर व्यक्तिगत अमल के उदाहरण ।

हालांकि मैं अपने भीतर चल रहे पुराने पापमय स्वभाव और पवित्र आत्मा के मध्य हो रहे द्वन्द को पसंद नहीं करता ,मैं इस बात से हर्षित होता हूं कि पवित्र आत्मा वास्तव में मेरे भीतर रहता और काम करता है । इसलिये मैं पवित्र आत्मा के साथ कदम मिलाकर चलना चाहता हूं ।

जब कि मेरे जीवन में मुझे पापमय स्वभाव की बातों से छुटकारा पाना है ,तो मेरे जीवन का मुख्य ध्येय है कि मुझमें आत्मा के फल लगें ,विशेषकर यह कि परमेश्वर, अन्य लोगों और स्वयं से प्रेम रखूं ।

कदम 5. प्रार्थना — प्रतिउत्तर

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 तीमुथीयुस 6:3-19 में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ गलानियों 5:13-26 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: सभोपदेशक 1,2,3,और 4 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। शिष्य बनाना: मत्ती 28:18-20। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।